बौद्ध दर्शन

बुद्ध निर्वाण के कुछ समय बाद ही राजगृह में प्रथम बौद्ध संगीति (सम्मेलन) हुई जिसमें 'विनयपिटक' जो आचार-सम्बन्धी ग्रन्थ और 'सुत्तपिटक' जो बुद्ध के उपदेश थे; का कुछ अंश संकलित किये गये।

द्वितीय बौद्ध संगीति वैशाली में हुई जिसमें 'विनय और सुत्त पिटक' का विस्तार किया गया तथा अभिधम्मपिटक (दार्शनिक ग्रंथ) के कुछ अंश संकलित हुए। इसी संगीति में भिक्षुसंघ थेरवाद और महासांघिक इन दो भागों में बँट गये जो आगे चलकर क्रमशः हीनयान और महायान कहलाये।

हीनयान के प्रमुख तीन सम्प्रदाय हुए — थेरवाद (स्थविरवाद) वैभाषिक (सर्वास्तिवाद) और सौत्रान्तिक। महायान के भी प्रमुख तीन सम्प्रदाय हुए — माध्यमिक (शून्यवाद), योगाचार (विज्ञानवाद) और स्वतन्त्र-योगाचार या स्वतन्त्र-विज्ञानवाद। इस प्रकार मूल बौद्ध दर्शन के मुख्य छह सम्प्रदाय हुए।

बुद्ध के चार आर्य सत्य — (i) दुःख है — संसार दुःखमय है (सर्वं दुःखम्, सर्वत्र दुःखम्)। संसार के सभी पदार्थ अनित्य और नश्वर होने के कारण दुःखरूप है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सारा जीवन ही दुःख है। और मृत्यु भी दुःख का अन्त नहीं है क्योंकि मृत्यु के बाद पुनर्जन्म है और जन्म के बाद मृत्यु है, इस प्रकार यह जन्म-मृत्यु चक्र चलता रहता है तथा जीव इसमें फँस कर दुःख भोगता रहता है।

(ii) दुःख-समुदय (दुःख का कारण है) :— दुःख उत्पन्न होता है। जो उत्पन्न होता है उसे कार्य कहते हैं और प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं हो सकता है। कार्य सदा कारण सापेक्ष होता है। कार्य उत्पत्ति के लिए हेतु-प्रत्यय सामग्री आवश्यक है। कारण-कार्य की लम्बी शृंखला है जो द्वादशाङ्ग-चक्र के रूप में घूमती रहती है। यह प्रतीत्यसमुत्पादचक्र ही दुःख समुदय का कारण है और अविद्या इसकी जननी है। अविद्याजन्य तृष्णा के कारण संसार में आसक्ति होती है और भवचक्र चलता रहता है।

Scanned with CamScanner

(iii) दुःख निरोध (दुःखों का नाश भी सम्भव है) :— अविद्या ही दुःख का कारण है जो द्वादशाङ्ग प्रतीत्यसमुत्पाद-चक्र की प्रथम अवस्था है, इसी अविद्या के कारण प्रतीत्यसमुत्पाद-चक्र चलता रहता है। अतः अविद्या के नाश से उससे चलने वाला प्रतीत्यसमुत्पाद-चक्र भी नहीं चलता। यही दुःख निरोध है। अविद्या-निवृत्ति से अपरोक्षानुभूति द्वारा दुःख का आत्यन्तिक निरोध हो जाता है। यही दुःख निरोध है, यही निर्वाण है।

(iv) दुःख निरोध मार्ग (दुःखों के नाश का उपाय भी है) :— यह नैतिक और आध्यात्मिक साधना का मार्ग है जिसे 'आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग' की संज्ञा दी गई है। इस मार्ग के अन्तर्गत सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक्-स्मृति तथा सम्यक् समाधि आते हैं इन्हें ही अष्टाङ्गिक मार्ग कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

→ अष्टांगिक मार्ग :- (i) सम्यक् दृष्टि :- अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है। अविद्या निवृत्ति हेतु चारों आर्य सत्यों का स्मरण तथा बुद्ध के उपदेशों में श्रद्धा रखना ही सम्यक् दृष्टि है।

(ii) सम्यक् संकल्प :- आर्य मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय ही सम्यक् संकल्प है।

(iii) सम्यक् वाक् :- वाणी की पवित्रता (अर्थात् मिथ्या, अनुचित एवं दुर्वचनों का परित्याग) और सत्यता ही सम्यक् वाक् है।

(iv) सम्यक् कर्मान्त :- हिंसा, इन्द्रिय-भोग, द्वेष और दुराचरण का परित्याग तथा अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य का पालन ही सम्यक् कर्मान्त है।

(v) सम्यक् आजीव :- निषिद्ध उपायों द्वारा जीविकोपार्जन न करना तथा न्याय-पूर्ण रीति से जीविकोपार्जन करना ही सम्यक् आजीव है।

(vi) सम्यक् व्यायाम :- शुभ की उत्पत्ति और अशुभ के निरोध हेतु सतत् दूषित विचारों का परित्याग एवं हृदय को धर्म-विषयक भावनाओं से परिपूर्ण रखना ही सम्यक् व्यायाम है।

(vii) सम्यक् स्मृति :- निर्वाण-मार्ग पर सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव एवं सम्यक् व्यायाम द्वारा जिन विषयों का वास्तविक ज्ञान होता है उसे सदा स्मरण रखना ही सम्यक् स्मृति है।

(viii) सम्यक् समाधि :- उपर्युक्त सातों मार्ग के पालन के उपरान्त मनुष्य का अंतःकरण शुद्ध होकर इस योग्य हो जाता है कि चित एकाग्र हो सके। एकाग्रचित होकर साधक निर्विकल्प प्रज्ञा की अनुभूति द्वारा धीरे-धीरे निर्वाण की अवस्था को प्राप्त करता है, यही सम्यक् समाधि है।

Scanned with CamScanner